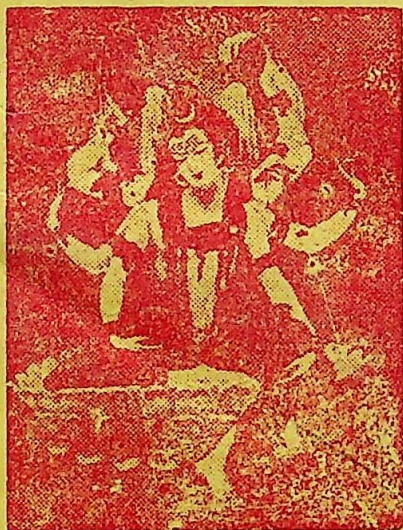




भास्कर प्रकाश



संपादक

स्वामी श्री आफताब जी
कारिहामा निवासी (कश्मीर)

धर्माय्य वितरण





3-8-1883
 18-1-1960
15-5-76

12-5-1893
 5-10-2016
23-4-143

3-8-1883
 18-8-56
21-4-1940

18-1-1960
 18-8-56
8-5-83

6-10-2016
 15-5-76
21-4-1940

प्राक् कथन

कश्मीर अपने प्राकृतिक दृष्ट्यों जलवायु तथा निजी स्थानीय विशेषताओं के कारण भूस्वर्ग की पदवी पर आसीन है। इतना ही नहीं, अपितु इस पुण्य भूमि ने अच्छे-अच्छे सूफियों, सिद्ध दार्शनिकों, अद्वितीय विद्वानों, उच्च कोटि के कवियों तथा प्रतिभाशाली आचार्यों को जन्म दिया है। क्योंकि संसार नाश-शील है अतः जिन महापुरुषों के चरित्र आज तक लिपि बद्ध किये गए हैं, उनका जीता जागता चरित्र हमारी आंखों के सामने इस समय भी फिर रहा है। उनकी मधुरवाणी से हम आज भी उसी प्रकार आप्लावित हो रहे हैं जिस प्रकार उनके समसामयिक आनन्द की मस्ती से झूम उठते थे।

यहां पर उन आदरणीय महानुभावों में से मैं विशेषतया एक का वर्णन कर रहा हूँ। आप का शुभ नाम उत्तम स्वरूप स्वामी आफताब जी है। आप का जन्म १२ भाद्रपद १८६३ वि. तदनुसार ३ अगस्त १८८३ ई. शनिवार को २ बजे ५० मि. कारिहामा में हुआ तथा आपका शिवलोक गमन ५ माघ २०१६ वि तदनुसार १८ जनवरी १९६० ई. १ बजे ५५ मि. सोमवार को हुआ। शैशव काल से ही आप में ऐसे लक्षण प्रतीत होते थे जिन से आपको अन्तर की विद्य-मान किसी आध्यात्मिक शक्ति का भाण होता था। आपके गुरुवर्य ने इन्हीं कारणों से एवं आपके सहज भाव के कारण ही आपको "भास्कर" के नाम से पुकारना उचित समझा। चूंकि भास्कर (सूर्य) के प्रकाश से

समस्त जगत का अन्धकार क्षणों में दूर हो जाता है। अतः उक्त महानुभाव के रचना-पात्र का नाम भी मैंने "भास्कर प्रकाश" रखना उचित समझा।

आपके गुरु महाराज एक महानुभावए बुद्धिजीवी तथा प्रतिभाशाली महापुरुष, चींकाल मुहला श्रीनगर के प्रवासी थे। उनका पूजनी नाम श्री गोबिंद जी तलाशी था।

स्वामी आफ़ताब जी अल्पायु से ही अर्थात् सात साल की अवस्था से ही सांसारिक बंधनों से परे सहकर परम-परमेश्वर की भक्ति में लीन हुए। आप ब्रह्मचारी-गृहस्थी सन्त थे। आपकी काव्य रचना में वैदिक तथा पौराणिक विचारदाराओं का आभास है।

अपनी ओर से मैंने आपके काव्यामृत को क्रम का पूर्ण प्रयत्न किया।

आशा है कि सहृदय-जन आपके काव्य में अद्वैत ब्रह्मवाद, अखण्ड ब्रह्मवाद, काव्य सूक्तियों के वैचित्र्य, चमत्कार को उत्पन्न करने वाली उपमाओं एवं अन्य अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग का स्वयं अनुभव करेंगे और आवश्यक ही उनसे प्रभावित होंगे।

आपकी रचनाओं का कुछ भाग अभी तक हस्त-लिखित नहीं हो सका है। यदि दैव ने चाहा तो अगले प्रकाशन में प्रकाशित करने का प्रयत्न करूँगा।

— हरी कृष्ण कौल
बी. ए.

ॐ श्री गणेशायः नमः

भजन नम्बर 1

गुडन्य तस आदि देवस कर नमस्कार ।
 विनायक सिद्धि दाता विघ्न हरतार ॥
 छु गणपत सारिकुय सर्ताज वोनमुत ।
 छु गणपत सारिकुय महाराज वोनमुत ॥
 छि कर्मन सारिनय पूजा तसन्ज आदि ।
 छि धर्मन सारिनय व्याधि करान बाद ॥
 करिथ आरम्भ सोरन इम न्त्रिय तसुन्द नाव ।
 गछयक सिद्ध कामना विन्धुक छु अभाव ॥
 सु प्रिय वर दैयि सुन्द गजमोख तरन तार ।
 इच्छा सन्तान सती हुन्द छु मोखतार ॥
 सु सरदार देवनय हुन्द सरकार मानुन ।
 ब दरबार तस छु सत्कार पार जानुन ॥
 विनायक छु सु नायक नित्य सहायक ।
 सु वरदायक तोतः करनस लायक ॥

सति सत माजि होन्दि पास कर म्य दासस ।
 करित वास आस भास व्यसवुन विकासस ॥
 चतुर दल द्वार मूलाधार कुय ध्यान ।
 त्रिपुर वोलंगित छु चूरिम तीत रोजान ॥
 तवै ननि नोन भास्कर पान पान वोलसान ।
 नित्य आनन्द मय निर्द्वन्द शोभान ॥

भजन नम्बर 2

आदि देव कारण व्याधि निवारो ।
 सिद्धि दातारो बुविनय जय ॥
 एक दन्त वक्र तुन्ड सर्व आधिकारो ।
 गज मुख दारो अज अभय ।
 उमा नन्दन गण सरदारो ॥ द्वि ॥
 चतुर दल बल वीर मूलाधारो ।
 नित्य पहरदारो ह्यत वरा अभय ।
 अस्त्र शस्त्र जोरा वारो ॥ सि ॥
 मन्त्र नायक सहायक उधारो ।

कर परम पारो विनायक सिद्धय ।

हे वरदायक बड़ि सरकारो ॥ सि. ॥
 कृष्ण पिनाल धूमर वर्ण शशि शिखरो ।
 नागेन्द्र धारो छुक परम परय ।
 बाल चन्द्र लाल माल नाल मुखतहारो ॥ सि. ॥
 विकट वर्ण सूर्य चन्द्र तारो ।
 त्रिनेत्र धारो स्वर्णमय ।
 विघ्न राज यज्ञ देव गगन आधारो ॥ सि. ॥
 माजि हन्द राज जाद हाताजदारो
 ईश्वर प्यारो हे गणेश्वरय
 रक्त वर्ण शक्ति प्रिय भक्ति सहारो ॥ सि. ॥
 पास कर भास नोन कास अन्धकारो ।
 कर हितकारो दासन जय ।
 सास भास्कर छुय तोतः कारो ॥ सि. ॥

भजन नम्बर 3

अन्धकारकि इन्दु शिव शान्त सत् गुरु ।
 परापर परम धाम राम राम परयो ॥
 आदि देव गोबिन्द नाद बिन्द अक्षर ।

निर्वन्द निष्काम राम राम परयो ॥
 ही दयि अद्वय दयि दयायि किन चाव ।
 प्रेम मस की जाम राम परयो
 तमि मस रस रस लगहय नावस ।
 हावस सुबह शाम राम राम परयो ॥
 इन्दु रव वोन्दि भास अज्ञान घट कास ।
 भास मन्ज खास व आम राम राम परयो ॥
 श्याम रंग भोम्बरो गूँ गूँ चानि स्यूत !
 ही तनि चय्यम हाम राम राम परयो ॥
 अनुग्रह पूर कर संकट दूर कर ।
 चलनम लोक पाम राम राम परयो ॥
 शक्ति पात सूत्यन मुक्त दात सान्य खेत ॥
 पापनाव हचि त हाम राम राम परयो ॥
 मुग्ली वायवनि अनाहृत बाजि बोज ।
 दर्द सोज स्वर साम राम राम परयो ॥
 आम्य जाम्य दुध प्याल भर्य भर्य थावय ।
 च्यखना दाम दाम राम राम परयो ॥
 कर गन्डिथ बर तल छुस ब दिम् वरदान ।

धर्म अर्थ मोक्ष काम राम राम परयो ॥

अज्ञान घट कास भास्कर नोन भास ।

अजपा प्राणायाम राम राम परयो ॥

भजन नम्बर 4

ह्यस के आगर मस के सागर ।

हे सत् गुरु रस् रस् मस म्य चाव ॥

ह्यस कुय ह्यस दिम मस कुय मस दिम ।

मस्तसन तमि मस ह्यस वसराव ॥

अन्द्रिमि तुन्द्रय प्राण तावनावित ।

चन्द्रम मण्डल अमृत चाव ॥

दम दम ओम कुय पन खारनावित ।

इन्द्राजस म्य निन्द्रि वुजनाव ॥

हमस द्वार मान्सर वार फोलनावित ।

सहस्र दल डल योग गत प्रावनाव ॥

कन्धापोरय शशि त रव सावित ।

शिव गाशि केशव शिव वुछनाव ॥

नव वय द्वारन दाह मिलनावित ।

द्वाद शान्त मण्डल काह मुछनाव ।।
 गगनस हेरि शेरि प्राण फेरनावित ।
 जीर बम सीर नाद बिन्द वुजनाव ।।
 शाह परवय सूत्य पान वुफनावित ।
 छिपि छारि सोहम पान प्रजनाव ।।
 ज्योति विभूति नन्य प्रावनावित ।
 आप्त काम प्राप्त म्यति कानाव ।।
 आकाश पाताल छाल फेरनावित ।
 जेरि जेरि हेरि बोन ईक बनाव ।।
 दिक पाल नव ग्रह दास भाव प्रावित ।
 सास भास्कर ननि नोन भासनाव ।।

भजन नम्बर 5

श्याम कामकि सुन्दर श्याम राम निष्काम श्रीधरै ।
 करुणाकर दुरिताहर वरदायक सत् गुरै ।।
 नन्द नन्दन बन्धन कास्तम त निर्बन्धन निर्भरै ।
 निर वासन गरुडासन शेष शयन ईश्वरै ।।

विश व्यापक हे विशमभर बर दायक सत् गुरै ॥
 भक्त रक्ष हे शक्तीश्वर मुक्त मुक्त कर हे मुखतसरै ।
 हे पुखत कार पार है च्यै मुखतहार भक्त्यन तार भवसरै ।
 चानि बरतल त्रावित छुस ब लर वर दायक सत् गुरै ॥
 आदि अन्त रसति नाद बिन्द ओंकार इन्द रव सन्दि सुन्दरै ।
 देह मन्दिर पूजहत भोगेन्द्र योगेन्द्र ब्रह्म रन्ध्रै ।
 दशम द्वार तर द्वादणान्त अन्तर चर दायक सत् गुरै ॥
 देव ब्रह्मा गन्धरव कारण ध्यान धारनायि तत्परै ।
 सूर्य चन्द्रम आकाश तात अनुशासन प्रकरै ।
 दयि भय चोन मानित सुरासुर वर दायक सत् गुरै ॥
 गत चान नित्य अपारन्नात दजवन तति शाह परै ।
 बल वीर ईरः धैर छुनः वीरन सीर कुस वन निबरै ।
 ऋषि केशाव डेशिहोन आश्चर्य वर दायक सत् गुरै ।
 धर कथ्ह ध्यान मनकुय अगोचर वनि वाणी सु बनि विस्मरै ।
 ह्यास त होश बुज तोर कोर पोशान वुछहोन ब्राह्म नैत्रै ।
 ज्ञान दृष्टि दिम पान च्यै हरी हर वरदायक सत् गुरै ॥
 निष्कारण चय सर्व कारण त्रियि कारण अन्तरै ।
 दश अवतार दारित चय हिश रस्ति निश भास निबर अन्दरै ।

सास भास्कर भासवुन छु भास्कर वरदायक सत् गुरै ।।

भजन नम्बर 6

योग धारणायि प्राण सन्धोरुम ।

ध्यान धोरुम शिव शम्भू ।।

शिव रागुक भस्म तनि पोरुम ।

जागि जोगुम करित वेराग ।

भाव नाग राद प्रेम पोन्थ फ्योरुम ।। ध्यान ।।

देह अभिमान गयव ज़न कोरुम ।

अहंकार ज़ोलुम रत्न द्वीप ।

मोह अन्धकार घटि गाश होरुम ।। ध्यान ।।

अनहत तारि स्वर चलि चोरुम ।

ज़ीर भम द्राव नाद बिन्द साज ।

इन्द रव वुन्दि अमृत होरुम ।। ध्यान ।।

नित्य अनित्य तोस् ब्यन चोरुम ।

रुम रुम सुय ओस रमान ।

ओं क्य पन दम दम खोरुम ।। ध्यान ।।

शून्यहुक बिनाह शिव विस्तोरुम ।

वुश्चोरुम क्षण क्षण ती ।
 काम क्रोध लोभ मुह मद मोरुम ॥ ध्यान ॥
 तल प्यट सुय मूल वुश्चोरुम ।
 होस्त मस वाल करुम बन्द ।
 मूलाधार द्वादशान्त तोरुम ॥ ध्यान ॥
 गाट आवित सुय गाट जोरुम ।
 दय यस दियि तस चलि ग्राव ।
 शिव मालन्य शिव हंस दोरुम ॥ ध्यान ॥
 सुबह शाम सुप्रभात गोरुम ।
 छोरुम मन्ज आम खासन् । ध्यान ॥
 सास भास्कर पान विद्योरुन ॥ ध्यान ॥

भजन नम्बर 7

पोत जूवे मोत वुज्जनो वुम ।
 ललनोवुम नारायण ॥
 प्रिय तमसिनजि हीय तन नव
 पोश वथरोस प्यठ गोशन ।

रोषि ययिना होश रावरोवुम ॥ लल. ॥
 बाल पान तस पथ रावरोवुम ।
 हाल कमि सुय नाल रट होन ।
 शिव शम्भो शुन्य बोलनोवुम ॥ लल. ॥
 काम देवस नाम लेख नोवुम ।
 पाम थविनम कर डेशन ।
 रुम रुम सुय राम रमनोवुम ॥ लल. ॥
 दार पथ दरि वार वुछनोवुम ।
 जूनि छोडुम मन्ज तारकन ।
 मारकन मन्ज नाल मुचरोवुम ॥ लल. ॥
 लुलि मन्जुलि लोल ललनोवुम ।
 बोल नोवुम सुबह शामन ।
 चीर सोवुम सुलि वुजनोवुम ॥ लल. ॥
 जीर भम कुय सीर वुजनोवुम ।
 फेरनावुम तति हेरि बोन ।
 वेरि तससन्जि शेरि वातनोवुम ॥ लल. ॥
 ज्यव नार् स्यूत वार् छलनोवुम ।
 तब लोलन नार शोलान ।

अछिव बूजुम कनव वुछिनोवुम ॥ लल. ॥

कन्द नाबद आरदनोवुम ।

फन्ध करित यूरि अन्तन ।

ऋन्द लोबमुत वोन्द फुलनोवुम ॥ लल. ॥

हंस द्वारै वार् पान परजनौवुम ।

प्रारि प्रासेस राम रादन ।

ब्रह्म सर पान सर करनोवुम ॥ लल. ॥

अथ वासय रास खेलनोवुम ।

श्वास ओश्वास नोन छु भासन ।

सास भास्कर विकास भासनोवुम ॥ लल. ॥

भजन नम्बर 8



✓ परि पूर्ण नूर भीरमुतये ।

सुर मोतये आंगन चाव ।

✓ शान्त निर्मल भ्रान्त कासवुनये

भासवुनये सास रव जन ।

• शिव शम्भो अलख बोलमुतये ॥ सू. ॥



✓ नङ्ग भस्मा अङ्गन मोल मुतये
 हटि भुजंग जटि तस छि गंग।
 ड्यकि चन्द्रम ट्यकि जोलमुतये ॥ सू॥ ✓

✓ अलक बूजित तिम गूरबाये
 जसोदाय सान करान विनती।
 धन द्वारौ भोरनस फोतये ॥ सू॥ ✓
 घयौ दुध थ्यनि आरद मोतये
 कन्द नाबद सु वोन्द सान।
 ह्यत जसोदा करान ब्रान्ट पोतये ॥ सू॥
 जोगि दोपनक योगी जानिव।
 भोग त्रावित छुस निराहार।
 काम दीवस भस्म कोरमुतये ॥ सू॥
 लोभ क्षौभ नहीं नै अभिलाशा।
 आशा यह एक मन में।
 कृष्ण दर्शन करनि आमुताये ॥ सू॥
 राधेश्याम को बोलो आदेश।
 ईश जोगी वेष धर के।
 तमि अभिप्राय योर अमुतोये ॥ सु॥

बूज जसोदायि ह्यस विसरानी ।
 सानी सान विनथा बोज ।
 खोचि बालुक छु रात जामुतये ॥ सू॥
 चानि दर्शन गछि तस छाये ।
 राय क्या छय माय भरहस ।
 अघूर भैरव फेर गछ पोतये ॥ सू॥
 जोगि वोननस छख अनजानी ।
 मान योगियन हुन्द सरदार ।
 राजि जगि हुन्द माजि जामुतये ॥ सू॥
 सृष्ट स्थित लय अनुग्रह बियि दण्ड ।
 अन्द ब्रह्माण्ड नित्य करबुन ।
 शेष शाये ईश आमुताये ॥ सू॥
 सुख मुख सुय दुख दादि कासान ।
 भासान जन सार् निशि ब्योन ।
 नोन अनुग्रह छु बन्योमुतये ॥ सू॥
 दुष्ट गालिन श्रेष्ठ छिस पालन ।
 भूमि वालुन छुस वोन्य भोर ।
 काल कालन पानय पोलमुतये ॥ सू॥

भार जगि हुन्द वार छुस वालुन ।

गालुन छुस दुष्ट सम्बन्ध ।

पालन कर्म वेदव्र वोनमुतये ॥ सू॥

✓ त्रन भवनन भय सुय कासान ।

भासान सुय निथननि नोन ।

मूल जगि हुन्द ब्योल वोवमुतय ॥ सू॥ ✓

✓ योग मायायि समयोग करिथय ।

प्रेम भग्थय नित्य हर्षान ।

कृष्ण शंकर करिथ नालमुतये ॥ सू॥ ✓

ईक्षन किन कोरुक वार संवाद ।

दर्शन आस हर्षानी ।

ती वोनुक यी जगतस ह्योतये ॥ सू॥

शशि लूसित रव खोतमुतये ।

प्रव तारकन हन्ज चमकान ।

शिव नाराण कुनय गोमुतये ॥ सू॥

नोन वोन पान यलि हर नय ।

बरन्य तार मुचरन आय ।

निबर अन्द्र एक भोसमुतये ॥ सू॥

वोन्द इन्दरौ मन् फोलमुतये ।

मंध्यानच संधि भासान ।

सुब शामन मेल कोरमुतये ॥ सू० ॥

वेद वाणी ईक भाव होवुक ।

भोवुक कस यि सीरि इस्रार ।

शाम प्रभात अर्ध म्यूलमुतये । सू० ॥

✓ देव आकाशि पोष वर्षाणी ।

अछ रछ मच नचनस गये ।

द्राव शम्भो सु आकाश खोतये ॥ सू० ॥ ✓

कर्म भूमि धर्मुक सोथ द्युन ।

परम पावन मुर्यादा ।

भोर जगतस तुलनि आमुतये । सू० ॥

दुष्ट दुर्जन नष्ट करनावनि ।

भरनावनि सृष्ट आनन्द ।

ईश चय छुक जेष्ट मोनमुतये ॥ सू० ॥

रक्षा करिन सिद्धन साधन ।

वेद विरुधियन वध करवुन ।

शुद्ध धर्मराज अन्द गोमुतये ॥ सू० ॥

नाद लोयुम तती लोल होतये ।

रासुक भास यानि वनि आम ।

सास भास्कर ज्ञन पूरि खोतमुतये ॥ सू० ॥

भजन नम्बर 9



श्याम रूपै हा डाम्बलो ।

सुबह फोलान फोलान वोलो ॥

शीश शायन मुकट धारी ।

निशी चय भास गरुडासवारी ।

ईश निर्वेष चाहि मुरारी ।

वेष करान करान वोलो ॥ सुबह० ॥

गूरि शुर्य गाव वछ गूरबाये ।

रास खेलनी गोकल आये ।

द्रायि चयय पति कमि अभिप्राये ।

माय भरान भरान बोलो ॥ सु० ॥

प्रेम दुध थयन छाये ख्यावीत ।

मायि नाबद क्षीर खंड ख्यावीत ।

चूरि थावत कर कांसि हावीत ।

हूर प्रारान प्रारान बोलो ॥ सु० ॥

साज सन्तूर अन् चयानि वेरे ।

रन मागुस तमना नेरे ।

बाज यलि गछि अद मा फेरे ।

नाज करान करान बोलो ॥ सु० ।

होशि वन्दय कबील क्रोनय ।

रोशि करहय पोषि वर्षोनय ।

रोशि मति गोस क्या गोय मयोनय ।

पोष छावान छावान बोलो ॥ सु० ॥

गोपियन् हन्दि गिन्दन बाजे ।

योगियन हन्द् हासरताजे ।

माजि जाव कस चिय ह्यूह राजे ।

लाज रछान रछान बोलो ॥ सु० ॥

खोनि ललवत इकना कुने ।

दिख च दर्शन वन्दहै मुने ।

रुनि जामन जरहाय चूने ।

जूनी गिन्दान गिन्दान बोलो ॥ सु० ॥

तारकन मन्ज वन्य दिनी नेरय ।

मारकन मन्ज पत पत फेरय ।

सास भास्कर उनास पारय ।

रास गिन्दान२ बोलो ॥ सु० ॥

भजन नम्बर 10



वानि दिमहोस बिन्द्राबन सय ।

कथ वनसय रटनम जाय ॥

समिवी समिवी हा सखियो सोख मोख दय नोन द्राव ।

श्याम् रूपनाल् रटहोन बाल् पानय वनि आव ॥

गोपाल ह्यत गोवर्धन सय ॥ क० ॥

लोल् वानी नादा लोयोस पोशिनूल वाद् गोविन्द गो ।

नाद् बिन्द तार जीर भम वायोस कृष्ण गोपी सोहमसो ।

दक्षिणयन उतरायनसय ॥ क० ॥

मोल माज् बन्ध कबील क्रोनुय त्रावित मान बिय अवमान ।

परत पान वार् कुनय जोनुय चिन्मय भाव सुरौ ध्यान ।

छ्यस प्रतिज्ञा योग क्षेम दिन्स्य ॥ क० ॥

कोलन पोन्थ फयूर कूल्यन श्रू द्राव वसत अवसवुन बाहन मासन

वन्द चोल त वोन्द फोल नोव बहार आव

गिन्दान नन्दलाल सीत दासन ।

असति थप करहोस रुनि दामनसय ॥ क. ॥

लोल् मन्जिले लोलि ललनावोन चूरि थावोन हावोन कस ।
गूर करहोस वोब्दि मन्ज सावोन नित्य चावोन प्रेमुक रस ।

पान आलवोस नारथ्यनसय ॥ क. ॥

चोयिशीत लछ जीवहर्पणसय दर्शनसय देवता आय ।

मोखत कुल्य खति तिथिस वर्षणसय स्पर्शनसय छि गोपयन माय

ऋषि क्रेषाण आकर्षणसय ॥ क. ॥

प्रेम रासय अथवास करिथय सास भास्कर छु नित्य चमकान ।

नाद लायोस हर्ष रस भरिथय सुलि नेरव काफिल छु दूरान ।

दोह धरि गछि पत लारनसय ॥ क. ॥

भजन नम्बर 11

ओं परवुन हंस ताजदार ।

कमि वनकुय जानावार ॥

जाल लगिनी सुय अन्का ।

माल गन्डहस छुम तमना ।

नाल रटहन सुय बालयार । क. ।

कोछ ब दिमहय हा कावो ।
 गछ त वन्तस दियि दर्शन ।
 वछि वालिन्जि भावस इस्रार । क० ।
 पोषि नूलव पोरयि हंसू ।
 कुकिल बोलान गोविन्द गू ।
 हर मुख छा किन हरद्वार । क० ।
 प्यठ गोषण र्टनम जाय ।
 काल पोषण प्ययिमा हाय ।
 बोन्द होन्दर्यस त रोषि चलि यार । क० ।
 खत बो लेखस हटिके रत ।
 जाविली कत् सत् शोभिदार ।
 यिपि नतै छ्यस ब दावादारा । क० ।
 बाल अनतने दूरिमा काल ।
 आल जिगरस गयिमै परकाल ।
 नाल जाम तस छि जरकार । क० ।
 हंस पखवय पत लारोस ।
 प्रारी प्रारोस डड़क वन ।
 दोह दरि गछि सोरि लोक चार । क० ।

दर्द सोजुक सन्तूर साज ।
 सासि परद ग्योव कोसतूर्य राज ।
 बति ती ती वनान कोल तार । क० ।
 भास्कर चेनत सासन मन्ज ।
 रुम रुम खास छु भासानी ।
 ललवुन छुप सुय सीरि इसरार । क० ।

भजन नम्बर 12

लोलि ललवत थावत सुलनावीत ।
 वोलस सोन श्याम सुन्दरो सुन्दरो ॥
 पवनकी नार् तन छसयो नावीत ।
 छुम वुहान लोल तोन्द्रो तोन्द्रो ।
 श्रवण शिशि कलि पान शह्लावीत ॥ व० ॥
 रंग रवकन प्रग वथरावीत ।
 निन्द्रि वुजत राज इन्द्रो इन्द्रो ।
 केहनो मंगयो गछतम पान हावीत ॥ व० ॥
 हरद ज़रदी पोष फोलनावीत ।
 पोषनूल मा हन्द्रो हन्द्रो ।

गोविन्द गू वखुत परनावीत ॥ व॥
 नाद लायय वाद याद पावीत ।
 लोल आम कृष्ण गन्द्रो गन्द्रो ।
 प्रेम दोध थ्यन गछय ख्यावनावीत ॥ व॥
 रोषि मो रोष होष रावरावीत ।
 पोष लागय गोन्द्रो गोन्द्रो ।
 कीन् भावय सीन् मुचरावित ॥ व॥
 हंस पखवय पान वुफनावीत ।
 ब्रह्म रन्ध्र मन्द्रो मन्द्रो ।
 सास भास्कर रास खेलनावीत ॥ व॥

भजन नम्बर 13

गछत भोम्बर वुछत बेरंग, श्याम रंग आकार छा ।
 निर्द्वन्द शिव नाद बिन्द छा, सूर्य चन्द्रम तार छा ।
 दुख चलि सन्मुख वुछहोन, सुख मुख दयव नेरि नोन ।
 मुख मुख छा गुरु मुख छा, हर मुख छा हर द्वार छा ।
 वोन्त तस छुन भ्रोन्ति करवुन, सून्तय पजिहस वातनस ।
 हरद ज़रदी नवबहार सुय, गुलज़ार छा गुलनार छा ।

हारि परबत प्रारि प्रारोस, शंकराचार्य व्यन दिमोस ।
 तार सर छा मोर सर छा, खनबल खादनयार छा ।
 मार मटि छुस पान मोरव, मो मोत नै वाति सोन ।
 अमार तसिसन्दि नार छु ललवुन, अंगार छा अबखार छा ।
 देव कारण ऋषि मुनीश्वर, बिन्द्रावन व्यन दिवान ।
 द्वारिकाय छा मथुराय छा, गोकलै गिरधार छा ।
 तावनुन बाजार यि संसार, खाम सौदो यावनुन ।
 कर्म फल सूरित छि चल लार, इक्रार छा इन्कार छा ।
 बिन्द्रावन नित्य छु गिन्दवुन, श्याम सुन्दर सीत असे ।
 ध्यान मय छा ज्ञानमय छा, निर्वाण योगाकार छा ।
 सासनय स्यूत रास खेलान, भासवुन क्षण क्षण छु नोन ।
 दास प्राराय करि अथवास, भास्कर तीजदार छा ।

भजन नम्बर 14

बहार आव कोन आव दिलदार इम शब ।
 चलै व्यस गछ वनुस विलजार इम शब ।।
 हीनय गौ अन्र्य रंग लयि लोसं प्रारान ।
 इम्बरजल चयश्म पुर खुमार इम शब ।।

दिमव छोह रोव करौ दोह तार गिन्दहौ ।
 कोलन पोन्थ फयूर कुल्यन सबजार इम शब ॥
 सु रस रस व्यस च अन्तन हाल भावोस ।
 तसन्दि हावस म्य छुम वसि नार इम शब ॥
 च प्रछतस म्यानि ज्यवि अद गोस मा गोस ।
 वुछोन अछि लोस दर इन्तिजार इम शब ॥
 गनीमत त् यी दम रोजि मा कालि ।
 पगाह मा मटि छुय म्योन मार इम शब ।
 ह्यामस जाग नागिरायस छागि वालन ।
 सहोन हीय माल जाहरि मार इम शब ॥
 करान लेला लेला मस्त मजनून ।
 जिन्दय दर गोर शबि बेदार इम शब ॥
 म्य गोमुत सूर दूर्यर कोताह ब चालय ।
 ब छूयस ललवान तिमय अंगोर इम शब ॥
 रिन्दव गिन्दुना करुक जिन्द पान मरनुय ।
 परान मन्सूर अन बर दार इम शब ॥
 तवै भास्कर दिवान सासन अन्दर नाद ।
 छु अजलुक पोन् वूयन मिलचार इम शब ॥

भजन नम्बर 15

सुदर्शनचक्र हयत नोन नेर धर्मुक शान पैदा कर ।
 इथिस वक्तस च शक्तिमान तिथि सामान पैदा कर ॥
 सनातन धर्मची रछ लाज पनून प्रण वार वोन्च पाव याद ।
 अधर्मच गाल वोन्च बुन्याद सु गार्गी यान पैदा कर ॥
 गुलन खारन कुनुय माने, अन्यायस न्यायकुय तकरार ।
 पुण्यस पापस गोमुत यकसान तम्युक अवज्ञान पैदा कर ॥
 कुटम्ब यौवन धनुक मोह मद अनर्थुक यच गोमुत अभिमान ।
 सूर्य प्रचडं दण्डुक कूप तिमन अवमान पैदा कर ॥
 परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम ।
 धर्मे संस्थापर्नाथाय, अद पनुन पान पैदा कर ॥
 सनातन वेद मर्यादा, ब्रह्मडिस हेरि बोन प्रकटाव ।
 दुरात्मन दुर्जनन होन्द क्षय ब एक आन फान पैदा कर ॥
 दयानन्द शंकराचार्य महात्मा बुद्ध बिक्रम बीर ।
 सुवेदान्त ललत प्रववेश सिन्धेमान पैदा कर ॥
 गुरु गोविन्द नरसिंह रूप नानक देव शिवाजी ।
 सिद्धि ऋद्धि हयत सत् ज्ञान सदा सनिदान पैदा कर ॥

सन्नक सत ऋषि त व्यास गौतम अगस्त नारद त बयि भरद्वाज
 सनातन वेदकुय प्रकचार क्रिया यौ सान पैदा कर ॥
 फर्ष प्यठ अर्षसय तामत, सु रोषण गोषणाय करनाव ।
 रिया कारन सितम गारन, उलट पुल्लान पैदा कर ॥
 नवन पीठन अन्दर आडर नवन नाथन हुन्द साम्राज्य ।
 तमिकि जिमवार नव सिद्धि प्रधान हनुमान पैदा कर ॥
 सरप बद खाह तबिच राम हून्य इथिस समयस तिमन फान कर
 बुनिल गगारायि त्रट तूफान तलुक प्यट फान पैदा कर ।
 यि घट छट छेय कास अन्दकार, प्रत्यक्ष भास सास भास्कर नो
 बहार हरदचि जरदी हाब हज़ार दास्तान पैदा कर ॥

भजन नम्बर 16

कुनि इखनो यावन लोलो ।
 खुनि ललवत करै ब गूर गूरै लोलो ॥
 निन्द्रि बेदार करथस त त्राबथम रव ।
 वनन वनवान च्यै इन्द्रनि हूरै लोलो ॥
 प्याल भरहै दोह पांशि इत सोलस ।
 तन व नावै कुंग कोफूरै लोलो ॥

शाम रुपस प्यठ च्यै गत करना ।
 पान आलवै जन पोंपूरै लोलो ॥
 लोल्य ब करहै मोल्य कुनि मेलखना ।
 आदम खाव अशिकनि चूरै लोलो ।
 मछि मछ बन्द हचि कुय छुक च बावुट ।
 मनके चुर कनके दूरै लोलो ॥
 कम शाहबोज सुन्दर त बियि गोन्दर ।
 जाल लगिहति छि हूर मस्तूरै लोलो ॥
 बाजगारी नाज कम छुक च हावान ।
 बाज अनहत साज सन्तूरै लोलो ॥
 सास भास्कर छु परि पूर नित्य चमकान ।
 तमि नूर दोद कोहि तूरै लोलो ॥

भजन नम्बर 17

मधुसूदन शुद्ध दोध चूरै लोलो ।
 खोनि ललवत करै ब गूर गूरै लोलो ॥
 मन मोहन वनि कुनि कनि इखना ।
 मुन्य वन्दहै नन्द किशोरै लोलो ॥

प्राण अपान अर्ग भर्ग पूज करहै ।

अहंकार जाल द्वीप कोफूरै लोलो ॥

प्रंग वथरै मन क्यन रंग रवकन ।

तन ब नावै कुंग कोस्तूरै लोलो ॥

नाल रटहत अज सोन साल इखना ।

माल गन्डहै रत्न होन्जरै लोलो ॥

कुकिल वनवान वन वन गोविन्द गू ।

होषि पोषनूल प्रेम कोस्तूरै लोलो ॥

प्रेम साजच आवाज नाद बिन्द तार ।

दर्द सोजुक बोज सन्तूरै लोलो ॥

धार अवतार भूमि वाल पापुन भार ।

मोह कंसस कर चूर चूरै लोलो ॥

हिय यावनन्य श्रावण आयि फोलनस ॥

गू गू चानि प्रेम भोम्बूरै लोलो ॥

हूर वनवान च्यय पत नूर भरथय ।

मच मस्तान चश्म मख मूरै लोलो ॥

नलि वनमाल हटि त्र्यट त कोस्तभ मन ।

शेरि मुकट वाल्य कन्दूरै लोलो ॥

सतकुय रास अथ रट चट म अथवास ।

सास भास्कर भास पूर पूरै लोलो ॥

भजन नम्बर 18

यन छयनन गोख तन छयसयो ब थारान ।

छसयो प्रारान द्यव यूरि यिये ॥

पत लारन इमन शाह सवारन ।

हंस पख्रवै वुफ़न गये ।

पर लूसिम कर छयस प्रारन ॥ छ.

कीत तम्बलावि यमि संसारन ।

आय कति सन कोर कुन गये ।

जाय वुछनै चाय अद मज़ारन ॥ छ.

व्यसि गिन्दहव नभच्यन तारन ।

लोल नारन वस मय जाजिये ।

रोब खान प्यठ पोत जूनि छारन ॥ छ.

रुम रुम तोस लूसस चारन ।

ओंकारिन पन म्य खोरमये ।

प्राण शुमरथि ध्यान छयसयो ब धारन ॥ छ.

नागि राय जन डुन्ग दित छारन ।

छागि वालन जागि जागये ।

आगर प्यठ सागर फयारन ॥ छ.

लोतोन्द्रस तोन्द्रस अन्द्रि संधारन ।

जाम स्वर्गिक सुन्दर म्य पारिमये ।

तमि नोर नूर लल छ्यस ब हारन ॥ छ.

शवन जालित शशि त रव कारण ।

शशि कलि हुन्द शेहजार छुये ।

तमि गाशि लय त्रनवै कारण ॥ छ.

तथ कुनिरस क्या सन्यर विचारन ।

सनि खोत सन्य वन्य म्य द्युतमये ।

आकाशि प्यठ पाताल फयरिन ॥ छ.

खाम सौदा पौखत बाजारन ।

यावनून मोख्त मोवोनये ।

कम शाह बाज बाज गय हारन ।

सास भास्कर नोन छु गाश धारन ।

रात क्रीलन अनि घट छयये ।

गाट गाटस घट गाश गारन ॥ छ.

भजन नम्बर 19

रुम रुमश्यामाकार ।
 छान्डोन बिन्द्रावन तलो ॥
 नाद बिन्द तेज ओंकार ।
 माधव नन्द नन्दन त लो ॥ रुम ॥
 मन मथुरायि आधार ।
 वथरोस मन्ज नेत्रन त लो ॥
 अत गत जन्म जन्म भार ।
 सत किन लागि तथ छयन त लो ॥ रुम ॥
 द्वारिकायि होन्द सु सरदार ।
 छान्डोन मन्ज तारकन त लो ॥
 हर मोख छा हर द्वार ।
 नेरोस मन्ज मारकन त लो ॥ रुम ॥
 गोकल कुय गुल बहार ।
 गोपाल सीत गोपियन त लो ॥
 गोवर्धन गिरि धार ।
 ननि नोन सु श्याम शामन त लो ॥ रु ॥

थनि चूर ह्यत गूरि यार ।

लूटान गूरि बायन त लो ॥

दुध लोट अमृत धार ।

चावान स्यूत भाजन त लो ॥ रु. ॥

कंसुन काल संहार ।

हंसो ओं जपन त लो ॥

नाद बिन्द जीर भम साज ।

साधना छन व्यपन त लो ॥ रु. ॥

यि छु तावनुन बाजार ।

श्रावण तोत कलन त लो ॥

यावुन भ्रम बाजगार ।

कलि इम दाद बलन त लो ॥ रु. ॥

समवि शक्ति बाजार ।

भक्ति मोखत मोलवन त लो ॥

खाम सौदा पोखत कार ।

सुधाम लोलि ललवन त लो ॥ रु. ॥

मोर मुकट शोभि दार ।

घटि मन्ज सूर्य प्रजलन त लो । रु॥

हटि त्र्यट माल शोभिदार ।

बाल छिस वाल कनन त लो ॥ रु॥

श्याम पीतम्बर धार ।

अम्भर मलित चन्दन त लो ॥

गम भर तेज अम्भार ।

असवुन क्या सु प्रसन्न त लो ॥ रु॥

रोनि गोड क्या श्रोनिदार ।

नचनस गछन श्रोन्त्य त लो ॥

मान्जि नम चन्द्रम तार ।

मन डोल अछ रछन त लो ॥ रु॥

बन्सरी वरद विस्तार ।

संसार सोर व्यसरन त लो ॥

लोल दित गोल आकार ।

नचनस क्या प्ररसन त लो ॥ रु॥

सास भास्कर तेजऋ दार ।

चमकान मन्ज दासन त लो ॥

विकास नोन भासन त लो ॥ रु॥

भजन नम्बर 20

गोपाल गोकलो । बोल रास आस गिन्दानी ।।

मोहन हा चलो ।

काच जून जून छिगलानी ।

श्रावुण तोत कल्योव ।। वो. ।।

निर्भय निष्कलो ।

कलि कल छम म्य घनानी ।

कलि वुजि शशिकलो ।। वो. ।।

शांकल वांकलो ।

लोल हांकल न छ्यनानी ।

भोम्बरनि ग्रांगलो ।। वो. ।।

इन्दु रव मन फोलो ।

गोविन्द गीत गुन्दानी ।

बन्धन मोकलो ।। वो. ।।

ग्वाल बाल खेलो ।

वछि गाव ह्यथ प्रारानी ।

जसोदायि मायि वोलो ।। वो. ।।

आयि जिगरस करतलो ।

मटि मार मा छुय खसानी ।

कर त्राविथ छुस बरतलो ॥ वोल् ॥

थनि चूर डांम्बलो ।

यंन छयन गोख तन कोन आख ।

मोनि लोस वोन्य वोलो ॥ वोल् ॥

श्याम कामकि कोमलो ।

रुम रुम राम छु रमानी ।

मोखत केश केश रम्बलो ॥ वोल् ॥

दूर्यर सूर मलो ।

दोरि दोरि फेरय वनानी ।

सन्न गोम यिन चानि बलो ॥ वोल् ॥

वथरै मन मन्जुलो ।

व्यास नारद छि तोतानी ।

सास भास्कर प्रजलो ॥ वोल् ॥

भजन नम्बर 21

वेरि तमि सन्जि शेरि प्राण सन्धोरुम ।
 ध्यान है धोरुम कृष्ण ध्यान है धोरुम ॥
 नाजनीन पानस सिंगार पोरुम ।
 परम आकाश म्योन माल्युन ।
 मोह घटि सु प्रकाशघटि गाश होरुम ॥ ध्यान ॥
 सुबह शाम प्रभात नोन म्य विचोरुम ।
 रुम रुम चोरुम खोरुम पन ।
 ओं परनोवुम मोह मद मोरुम ॥ ध्यान ॥
 जीर भम तारि नाद बिन्द स्वर खोरुम ।
 दशनाद मुरली वाद प्रकट्याव ।
 राधा कृष्ण कृष्ण वाद उश्चोरुम ॥ ध्यान ॥
 दर्द नयि ओश चालि चालि होरुम ।
 सत परदः चडिश्च हूर बनवान ।
 अनुग्रह सागर आगर फयोरुम ॥ ध्यान ॥
 देह अभिमान मोह ग्यव ज़न कोरुम ।
 अहंकार जोलुम रत्न द्वीप ।

गोड मानसरंवर हम् हंस धोरुम् ॥ ध्यानः ॥

सतचे अथवास रास खेल नोवुम् ।

सास भास्कर खास भास वनि आम ।

अथवास विकास होश विस्तोरुम् ॥ ध्यानः ॥

भजन नम्बर 22

अष्ट भोज नारायण कष्ट करतम् दूर ।

छनथ रुनि मन्जलिस करय गूर गूर ॥

ध्रुव सन्दि पाठिन दितम् वरदान ।

शुक देवनि पाठ्य प्राव निर्वाण ।

शक्ति पात अनुग्रह करुम् पमरि पूर ॥ छः ॥

ऋद्धि सिद्ध प्राव सम्पदा ।

रोग शोक कास भास नान सर्वदा ।

भोग योग संयोग दितम् पूरि पूर ॥ छः ॥

सत वहरि प्यठ चययि पत पत द्रास ।

अतः गत जन्म मरनुच हान कास ।

मत ना च्य वथ वथ छम् भ्य दूर ॥ छः ॥

वार छुम् न नेर फेर मारकन ।

तारकन भँज गुजमच ब काचजून ।

चठ सथ पखु छुन दुसतूर ॥ छ. ॥

सतकुय मस चाव हटस के आगर ।

ग्रख लागि भागर सानरस तान्य ।

हटस सान तमि मस बन भखमूर ॥ छ. ॥

प्रेम मस खअस्य भूरिम बर्बुक आस ।

पास कर पनन्यन टाठयन हुंद ।

द्रिय चान्य छम हा वूसि गोम सूर ॥ छ. ॥

लोलुचि रगि सग फेरि हेरि बुन ।

दर्दुचि दगि पय फेरि क्षण क्षण ॥

तमि स्नेह रेह छः दजान कोहिनूर ॥ छ. ॥

पोशकर नाथ होश दिम गोश थाव ।

कल्य च्यानि फिर फिर हजि गुयम कजर ।

मुनि लोस वन्य मस हटम दूर दूर ॥ छ. ॥

अथवास रटुम चोन दामन ।

सास भास्कर कास मुँह अन्धकार ।

गत दिम पथ रछुम नत मल सूर ॥ छ. ॥

भजन नम्बर 23

जगथ बीज चक्र शोडशडलारमाण न्यथ चक्र पीठस तल
नमन कारण परान मँगल । उमा देवी क्षमा वतसल

मँगल दा सर्वमँगली ॥ ० ॥

प्यमोय पादन त् थवि लादन । क्षमा कर सान्यन अपरादना
च कण दार वार, फरियादन । अबल बुल बालनुय नादन ।

तवय त्राविथ छि लर बरतल ॥ ० ॥

सनातन धर्मुचिय रछ लाज । नवन पीठन कुनुय सामराज ।
च स्यध कर पान छख सरताज । छि त्रनुवय लूक च्य मोहताज

महाराज आदिराज श्रीफल ॥ ० ॥

च ऋण रूग भय शूक दूर कर । पनुन अनुग्रह च भरपूर कर
च क्रूध काम वैरियन सूर कर । च भूग यूग ज्ञाण मंजूर कर

च समयूग, सम्पदा दित अटल ॥ ० ॥

तुहि माता पिता दाता । तुहि भ्राता जगथ माता ।

तुहि भक्तयन ति वरदाता । तुहि दुष्टन सदा घाथा ।

च नन्य भास कास सर्व ग्रहबल ॥ ० ॥

यि माया मूह करतम च दूर । चल्यम अज्ञान फोल्यम युथनूर ।

गलन काम क्रूध दुर्जन चूर। पनञ अनुग्रह च कर भरपूर।

तवय दिन राथ छम चान्य कल॥.॥

फौल्यम अद हृदयि कुय कमल। चल्यम अज्ञाणुचिय ग्रँगला

दज्यम काम क्रूध मूह जँगल। वुज्यम शीखर कला शशिकल।

वज्जान नाद ब्यँद तार निश्चल॥.॥

भद्रकाली वाजाली नेर। सतुच तलवार ह्यथ वार फेर।

छ कर फुरथसः म कर वोन्य चेर। अन्याय छठ छाय कास अंधेर।

च भास सास भास्कर निर्मल॥.॥

भजन नम्बर 24

जगथ बीज तीज परि पूरण। कुरिथ छख व्याफत चुय होरे बोन।

नभामे चरण कमलन दोन। क्षमा कर ही उमा दीवी॥.॥

परात पर पर अपर व्यसतार। छु चाने आसन बासान सार।

दयाये चानि बिन वुस्तार॥.॥

ऋणन शूकन भयन रूगन। क्षणन मँज छख करान मूचन।

दिवान भूगन त् ब्ययि यूगन॥.॥

कटाक्षा युद गछख कुरिथुय। दयाये चानि गछ तरिथय।

नेत्र छिम लील अशि भरिथुय॥.॥

पणुन प्रण करत वोन्च चुय याद । दिवान शुर्य लोल हुत्य छिय नाद
च्य रोस कुस बोजि सोन फरियाद ॥ ० ॥

करान सृष्टि थरथ त् ब्यथि समहार । त्रिकारण पान छख
आधार । छु चाने अज्ञया अनुसार ॥ ० ॥

तुहि माता पिता भ्राता । गुरु बँधू त् व्ययि दाता ।

शुर्यन कुस असि च्य व्यन माता ॥ ० ॥

बरस तल अस्य गँडिथ छिय कर । अबल बालक छि
त्राविथ लर । छ मा आश काँसि हुँज चुय वर ॥ ० ॥

म्य दिम ज्यव गीत ग्यवय चानि । नृत्य ह्यकि क्याह
वोनिथ वाणी । करण वीद चोर त्वता चानी ॥ ० ॥

चु पानय पान छख ज्ञानान । पनुन महिमा कुस करिमान
ब्रह्मादिक दीव छि तति व्यसरान ॥ ० ॥

यि माया मुह म्य करतम दूर । चलान अँधकार फलान
आसि नूर । बन्यम साक्षात्कार भरपूर ॥ ० ॥

यि गट छठ छाय वोन्च कासतम । प्रत्यक्ष सास भास्कर भासतम ।
सदा सत्य किन्य प्रसन्न आसतम ॥ ० ॥

भजन नम्बर 25

भक्तानुग्रहकारिणी । शक्ति त्रलोक धारिनी ।
 राज्य रयव रानि ब्रारी । श्री राज्ञी क्षमाकार ॥
 चमकान कूटि रवय । च्यथ गगन त्राव प्रवय ।
 अनाहद शिव शिवय । बोलवुन छु बूद ऊँकार ॥ ० ॥
 द्वादश अर्क वीज आकार मुकट सोलह सिंगार ।
 हठि त्रठि त माल शहमार । सिंहासनस त सवार ॥ ० ॥
 च्यथ रूप तीज समव्यथ । स्यध रूप बीज असथ्यथ ।
 आनँद सयँध व्यकस्यथ । प्रखचार यि चोन सोफार ॥ ० ॥
 हीं बीज कल्लीं बीजी । सौ बीज शाँत तीजी ।
 राम राज्ञी अबीजी । स्वाहा सदा नमस्कार ॥ ० ॥
 भक्तयन रछिथ च्य पथ न्यथ । शकि त्रैलोकी असथ्यथ ।
 दुर्गी निवार दुर्गथ । दीर्ग रग वोन्य चच निवार ॥ ० ॥
 पुन्य पाप कर्म लोनुय । रुव लेख छल च प्रोनुय ।
 मुटि न्याय छुय च्य सोनुय । नोन हाव वोन्य च प्रखचार ।
 ऊँकार वीद गोनुथ । त्रेयि बीद अबीद मोनुथ ।
 क्याह मान्ये तथ च्य जोनुथ जाननस कर छुतकार ॥ ० ॥

निश दिन शरण त्रिकारण । शशदर लगिथ छि प्रारण ।
 ऋयष केशुवुन्य व्यचारण । प्रारण छि नेंद्र बेदार ॥
 काम क्रूध लूभ दुर्जन । गाल पाल वोन्थ चु सरजन ।
 पर्वथ काल्य छि लरजन । दीह कुय क्याह छु आधार ॥ ० ॥
 चानी दया भवानी । ह्यकि क्या वोनिथ यि वाणी ।
 अँजराव न्याय सअनी । गुँजराव छि चान्य शीरखार ॥ ० ॥
 नाणा रूफ दारिथ । आर्त्य च्य सारी तारिथ ।
 वोन्थ वार्य सान्य छि आर्त्य । तार्य क्याह चु धार अवतार ॥ ० ॥
 गौरी अगूर दुख कास । गुरु मुख सँमुख बास ।
 हर मुख छार वुन दास । सास भास्कर चमत्कार ॥ ० ॥
 ॥ ० ॥ श्री राज्ञी क्षमाकार ॥ ० ॥

भजन नम्बर 26



ललवान सीरी हक, जेरि, हेरि बोन, छम वजान, जीरः बम तार
 ह्यस के मयखान, मस यलि ब चोवनस, बोवनम सीरी इसरार ॥
 आलव तोरय गोख, दरियाव दाम, चोख शोकन कुरुख मिलचार
 सतवय आकाश, सतवय पाताल, तल प्यठ दिथ कुनय ठान ॥
 गाह गट गाह गाश गाह प्रकाश नूरान एकसान सोरि सामान ॥

रँगर बेरँग सूरथ सु मूरथ नन्य द्राय दर बाज़ार ।
 गगनय पवनय लागनय गागनय सथ नय ब्ययि नवद्वार
 सुय हज़ार दासतान बोलान नय, नय मुलवान ह्यथ खरीदार
 पनुनुय ह्युन ध्युन, पनुनुय बाज़ार, पानय ग्राख, बययि सौदागर ।।
 हरद, सँत कुनिरस वोतँ कुनि लुबमस न, दर्दनय फेरि शटहज़ार ।
 सथ पर्दः चढि थुय हूरः द्रायि वनवान पोशन कुरुखतूमार ।
 ग्रख लज्य सुदरस दरवाज़ खुल गुये अनुग्रह ध्युतुखअभार ।
 कँदा पोरय जूनि डबि शशि रव सअविथ नाविथ अँदिर मि तुँदरय प्रान ।
 गटि मैज भास्कर सास बास नाविथ शिव गाश कीशव सु शँत आकार ।। ॥

GIRDHARI LAL
 ADVOCATE BHAT
 47, colonels colony
 BOHRI - T. T. Poo
 Jm



Girdhari Lal Bhat
 ADVOCATE
 High Court J&K
 JAMMU.

Lazer Typesetting at : Ashirwad Lazer Graphics, Jammu.
 © : 543812 (P.P.)

Supplied by : Surbhi Stationers, Ambphalla Jammu.

© : 576963, 576828

